

छोड़ो तो छूटो!

नये विश्व के परिवर्तक, सर्व आत्माओं के परमप्रिय शिव बाबा अपने आदि रत्न बच्चों प्रति बोले:-

“आज बापदादा अपने आदि स्थापना के कार्य में निमित्त बने हुए सहयोगी बच्चों को देख रहे हैं। सभी सहयोगी बच्चों के भाग्य को देख हर्षित हो रहे हैं। स्थापना के नक्शे को देख रहे थे। आदि काल इस श्रेष्ठ ब्राह्मणों के संसार की हिस्ट्री और जाग्राफी को देख रहे थे। कौन-कौन श्रेष्ठ आत्मायें किस समय किस स्थान पर और किस विधि पूर्वक सहयोगी बने हैं। क्या देखा? तीन प्रकार के सहयोगी बच्चे देखे। एक बापदादा के अलौकिक कर्तव्य को देख बापदादा की मोहनी मूर्त, रुहानी सीरत को देख बिना कुछ सोचने की मेहनत के देखा और देखने से कल्प पहले की स्मृति के संस्कार प्रत्यक्ष हो गये। सेकेण्ड में दिल से निकला यह वो ही मेरा बाबा है। ऐसे बिना मेहनत के सहज बाप के स्नेह में समाये हुए सहयोगी बन गये। सप्ताह कोर्स की भी मेहनत नहीं। लेकिन ईश्वरीय स्नेह के फोर्स से बाप और बच्चों का मिलन हो गया। एक ही शब्द में जीवन के साथी बन गये। बच्चों ने कहा तुम ही मेरे, बाप ने कहा तुम ही मेरे। मेहनत का सवाल नहीं। ऐसे सेकेण्ड के सौदे वाले बिना मेहनत, मुहब्बत में समाये हुए हैं। दूसरे निमित्त बने हुए श्रेष्ठ आत्माओं के त्याग तपस्या और सेवा के सैम्पुल को देख सौदा करने वाले हैं। पहले ग्रुप ने बाप को देखा। दूसरे ग्रुप ने ज्ञान गंगाओं के सैम्पुल को देखा। बुद्धिबल द्वारा सहज बाप को जाना और सहयोगी बने। फिर भी दूसरा ग्रुप भी बच्चों द्वारा बाप के साकार सम्बन्ध में आये। निराकार को भी साकार में सर्व सम्बन्धों में पाया। इसलिए साकार रूप में साकार द्वारा सर्व अनुभव करने के कारण साकारी पालना के लिफ्ट की गिफ्ट ली। यह भाग्य कोटों में कोई, कोई में भी कोई को प्राप्त हुआ। ऐसे लिफ्ट की गिफ्ट लेने वाले स्थापना के कार्य में सेवा के क्षेत्र में निमित्त बनी हुई आदि आत्मायें, ऐसे ग्रुप को निमन्त्रण दे बुलाया है। ऐसे तो और भी निमित्त बने हुए बच्चे हैं। लेकिन विशेष थोड़ों को बुलाया है। जानते हो किसलिए बुलाया है? बीच-बीच में फाउन्डेशन को चेक किया जाता है। अगर फाउन्डेशन ज़रा भी कमज़ोर होता है तो फाउन्डेशन का प्रभाव सब पर पड़ता है। सेवा के क्षेत्र में सेवा के निमित्त फाउन्डेशन आप जैसे रत्न हैं। पहला ग्रुप यज्ञ की स्थापना के फाउन्डेशन बने। सेवा के निमित्त बने। लेकिन सेवा का प्रत्यक्ष पहला फल आप जैसा ग्रुप है। तो सेवा के प्रत्यक्ष फल के रूप में वा शोकेस के पहले शो पीस आप श्रेष्ठ आत्मायें निमित्त बनीं। इतना अपना महत्व जानते हो? नये पत्तों की चमक, दमक, रौनक, उमंग-उल्लास के विस्तार में आदि श्रेष्ठ आत्मायें छिप तो नहीं गये हो! पीछे वालो को आगे करते, स्वयं आगे से पीछे तो नहीं हो गये हो! यूँ तो बापदादा भी बच्चों को अपने से आगे करते, लेकिन आगे करके स्वयं पीछे नहीं होते। कई बच्चे होशियारी से जवाब देते हैं कि पीछे वालों को हम चाँस दे रहे हैं। चाँस भले दो लेकिन चांसलर तो रहो ना। इतनी जिम्मेवारी समझते हो? जो पुरुषार्थ के कदम हम उठायेंगे हमें देख और भी ऐसे उमंग उत्साह के कदम उठायेंगे। यह स्मृति सदा रहती है? नये, नये हैं, लेकिन पुरानों की वैल्यु अपनी है। पुराने पत्तों से कितनी दवाईयाँ बनती हैं। जानते हो ना। पुरानी चीजों का कितना मूल्य होता है। पुरानी वस्तुएँ विशेष यादगार बन जाती हैं। पुरानी चीजों के विशेष म्यूजियम बनते हैं। पुरानों की वैल्यु जानते हुए उसी वैल्यु प्रमाण कदम उठा रहे हो? अपने आपको इतना अमूल्य रत्न समझते हो? बाप समान उड़ते पंछी हो? ब्रह्मा बाप की पालना का रिटर्न दे रहे हो? यह साकार पालना कोई साधारण पालना नहीं। इस अमूल्य पालना का रिटर्न अमूल्य बनना और बनाना है। विशेष पालना का रिटर्न, जीवन के हर कदम में विशेषता भरी हुई हो। ऐसे रिटर्न दे रहे हो? सारे कल्प के अन्दर एक बार यह पालना मिलती है। और उसके अधिकारी आप विशेष आत्मायें हो। ऐसे अपने अधिकार के भाग्य को जानते हो? तो आज ऐसे भाग्यवान बच्चों से मिलने आये हैं। तो समझा क्यों बुलाया है? रिजल्ट तो देखेंगे ना!

यह सारा ग्रुप तो ब्रह्मा बाप के हर कदम पर फालो करने वाले हैं ना। क्योंकि इन साकार आंखों से देखा। सिर्फ दिव्य नेत्र से नहीं देखा। आँखों देखी हुई बात फालो करना सहज होती है ना। ऐसे सहज पुरुषार्थ के भाग्य अधिकारी आत्मायें हो। समझा कौन हो? जाना, मैं कौन? मैं कौन की पहेली पक्की याद है ना! भूल तो नहीं जाते हो ना! बापदादा वतन में इस ग्रुप को देख रूह-रिहान कर रहे थे। क्या रूह-रिहान की होगी, जानते हो? देख रहे थे अपने भाग्य के मूल्य को कितना जाना है और कितने इस भाग्य के स्मृति स्वरूप रहते हैं। स्मृति स्वरूप सो समर्थ स्वरूप। तो कितने समर्थ स्वरूप बने हैं। यह देख रहे थे। विस्मृति और स्मृति की सीढ़ी पर उतरते और चढ़ते हैं वा सदा स्मृति स्वरूप द्वारा उड़ती कला में जा रहे हैं। ऐसे तो नहीं, पुराने, पुरानी विधिपूर्वक चलने वाले हैं। जो उड़ती कला के बजाए अब तक भी सीढ़ी उतरते चढ़ते रहते। यह सब बच्चों की विधि देख रहे थे। ब्रह्मा बाप बच्चों के स्नेह में बोले, सदा हर कदम में सहज और श्रेष्ठ प्राप्ति का आधार मुझ बाप समान एक बात सदा जीवन में ब्रह्मा बाप की तावीज़ के रूप में याद रखें – “छोड़ो तो छूटो”। चाहे अपने तन की स्मृति को भुलाए देही अभिमानी बनने में, चाहे सम्बन्ध के लगाव से नष्टमोहा बनने में, चाहे अलौकिक सेवा की सफलता के क्षेत्र में, चाहे स्वभाव संस्कारों के सम्पर्क में – सभी बातों में छोड़ो तो छूटो। यह मेरेपन के हाथ इन डालियों को पकड़ डालियों के पंछी बना देते हैं। इस मेरेपन के हाथों को छोड़ो तो क्या बन जायेंगे – उड़ते पंछी। छोड़ना तो है नहीं, बनना तो यही है – यह नहीं। लेकिन हे आधार मूर्त श्रेष्ठ आत्मायें “बन गये” यह सेरीमनी मनाओ। सोच रहे हैं,

प्लैन बनायेंगे, नहीं। सोच लिया, कौन सी सेरीमनी मनायेंगे। हर ग्रुप फंक्शन मनाते हैं ना। आप लोग कौन सा समारोह मनायेंगे? आप तो ब्रह्मा बाप को फालो करने वाले ब्रह्मा के साथी बच्चे हो ना। ईश्वरीय परिवार की बुजुर्ग आत्मायें हो। आप सबके ऊपर बापदादा और परिवार की सदा नज़र है कि यही हमारे आदि सैम्पुल स्वरूप हैं। सारे परिवार के लिए, बाप की सर्व आशाओं के दीपक हो। तो कौन सा समारोह करेंगे! बाप समान बन गये, जीवनमुक्त आत्मायें बन गये! नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप सो समर्थ स्वरूप बन गये! संकल्प किया और बने। ऐसा समर्थ समारोह मनाओ। तैयार हो ना। वा अभी भी सोचते हो – करना तो चाहिए, चाहिए नहीं लेकिन बाप की सर्व चाह पूर्ण करने वाले हम आदि सैम्पुल हैं – ऐसे निश्चयबुद्धि विजयी रत्न, विजय का समारोह मनाओ। समझा किसलिए बुलाया है! स्पष्ट हो गया ना। इन सभी को ताज पहनाना। जिम्मेवारी के ताजपोशी मनवाना, इन्हें से। इसलिए आये हो ना! बोलते नहीं हो। बुजुर्ग हो गये हो। ब्रह्मा बाप को क्या देखा। अभी अभी बुजुर्ग और अभी अभी मिचनू किशोर। देखा ना। फालो फादर, हाँ जी करने में मिचनू बन जाओ और सेवा में बुजुर्ग। छोटे बच्चों की रौनक देखी ना – कितना मजे से कहते थे – हाँ जी, जी हाँ!

विशेष निमन्त्रण पर विशेष आत्मायें आई हैं, अब विशेष सेवा की जिम्मेवारी का फिर से समारोह मनाना। बीच बीच में ताज उतार देते हो। अभी ऐसा टाइट कर जाना जो उतारो नहीं। अच्छा फिर सुनेंगे कि समारोह की रिजल्ट क्या हुई। अच्छा।

सदा सर्व आत्माओं के निमित्त, उमंग उत्साह दिलाने वाले, सदा हर पुरुषार्थ के कदम द्वारा औरों को तीव्र पुरुषार्थी बनाने वाले, व्यर्थ को सेकेण्ड में छोड़ो और छूटो करने वाले, सदा ब्रह्मा बाप को फालो करने वाले, ऐसे सेवा के आदि रत्नों को, पालना की भाग्यवान विशेष आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

आमन्त्रित भाई बहनों के ग्रुप से:- सभी अपने को विशेषज्ञ आत्मायें तो समझते हो ना। विशेष आत्मायें हो या बनना है? करेंगे, देखेंगे, सोचेंगे, ऐसी गें गें की भाषा वाले तो नहीं हो ना। अपने महत्व को जानो कि हम सबका महत्व कितना है। जितना बाप बच्चों के महत्व, को जानते हैं उतना बच्चे अपने महत्व को सदा याद नहीं रखते। जानते हैं लेकिन याद नहीं रखते। अगर याद रहता – तो सदा ही समर्थ बन औरों को भी समर्थ बनाने के, उमंग उत्साह बढ़ाने के निमित्त बनते। तो निमित्त हो ना? बीती सो बीती कर लिया है। बीती को भुला दिया और वर्तमान, भविष्य सदा उमंग उत्साह वाला बना लिया। चलते-चलते साधारण जीवन में चलने वाले अपने को अनुभव करते हो, लेकिन साधारण नहीं हो। सदा श्रेष्ठ हो। व्यवहार किया, पढ़ाई की, प्रवृत्ति सम्भाली, यह कोई विशेषता नहीं है। यह भी साधारणता है। यह तो लास्ट नम्बर वाले भी करते हैं। तो जो लास्ट नम्बर वाले भी करते वह आदि रत्न भी करें तो क्या विशेषता हुई। आदि रत्न अर्थात् हर संकल्प और कर्म में औरों से विशेषता हो। दुनिया वालों की भेंट में तो सब न्यारे हो गये, लेकिन अलौकिक परिवार में भी जो साधारण पुरुषार्थी हैं उनसे विशेष हो। दुनिया के हिसाब से लास्ट नम्बर भी विशेष है लेकिन ईश्वरीय परिवार में आदि रत्न हो, विशेष हो। उसी हिसाब से अपने को देखो। बुजुर्ग सदा छोटों को अच्छे ते अच्छी सहज राय देने वाले, रास्ता दिखाने वाले होते हैं। ऐसे आप मुख से बोलने वाले नहीं लेकिन करके दिखाने वाले हो। तो हर कदम, हर कर्म ऐसा है जो ईश्वरीय परिवार की आत्माओं को विशेष दिखाई दे।

यही विशेष आत्माओं का कर्तव्य है ना। जो आप विशेष आत्माओं को देखे उसे बाप की स्मृति आ जाए। जैसे देखो यहाँ मधुबन में अभी भी साकार रूप में दीदी, दादी को देखते हैं तो उन्हें के कर्म में विशेष क्या समाया हुआ दिखाई देता है? बाप दिखाई देता है ना! यह भी साकार आत्मायें हैं ना। यह ब्रह्मा जैसी विशेष पार्टधारी तो नहीं, निराकार शिव बाप जैसी भी नहीं, ब्रह्मा जैसी भी नहीं। ब्राह्मण हैं। तो वह भी ब्राह्मण आप भी ब्राह्मण तो जैसे वह विशेष निमित्त आत्मायें हैं, कैसे निमित्त बनीं? जिम्मेवारी समझती हैं ना। जिम्मेवारी ने ही विशेष बना दिया। ऐसे ही स्वयं को भी अनुभव करते हो ना। आप भी जिम्मेवार हो ना। या दीदी दादी ही जिम्मेवार हैं। सेवा के क्षेत्र में तो आप ही निमित्त हो ना। चारों ओर बापदादा ने सभी विशेष आत्माओं को निमित्त बनाया है। कोई कहाँ, कोई कहाँ। इतनी जिम्मेवारी सदा स्मृति में रहे। जैसे दीदी दादी को निमित्त देख रहे हो। ऐसे ही आप लोगों से सबको अनुभव हो। वह समझें कि यह आदि रत्न हैं, इन्हें से हमें विशेष उमंग उत्साह की प्रेरणा मिलती है। यह कहती तो नहीं हैं ना कि हम दीदी दादी हैं, हमको मानो, लेकिन कर्म स्वतः ही आकर्षित करते हैं। ऐसे ही आप सबके विशेष कर्म सबको आकर्षित करें। इतनी जिम्मेवारी है। ढीले तो नहीं हो ना। क्या करें, कैसे करें, डबल जिम्मेवारी है। ऐसे कहने वाले नहीं। छोड़ा और छूटा। इतनी बेहद की जिम्मेवारी होते भी बाप को देखो ना। स्थूल जिम्मेवारी भी देखी ना। शिवबाबा की बात किनारे कर दो, लेकिन ब्रह्मा बाप को तो साकार में देखा ना। ब्रह्मा बाप जितनी जिम्मेवारी स्थूल में भी किसी को नहीं है। आप सोचेंगे क्या करें वायुमण्डल में रहते हैं। वायुब्रेशन खराब रहते हैं। बगुले ढूंगें लगाते रहते हैं। चारों ओर आसुरी सम्प्रदाय है। लेकिन ब्रह्मा बाप ने आसुरी सम्प्रदाय के बीच न्यारा प्यारा बनकर दिखाया ना। तो फालो फादर।

अभी क्या करेंगे? यहाँ से जाओ तो सब अनुभव करें कि हमारा उमंग उत्साह बढ़ाने वाले स्तम्भ आ गये हैं। समझा। ऐसे बाप की उम्मीदों के सितारे हो। छोटे छोटों की कोई भी बातें दिल पर नहीं रखो। बुजुर्गों की दिल फराखदिल, बड़ी दिल होती है। छोटी दिल

नहीं होती। जैसे ब्रह्मा बाप ने सभी की कमजोरियों को समाकर श्रेष्ठ बना दिया ऐसे करते हैं, यह तो सुनते ही नहीं हैं। न सुनने वाले को भी सुनाने वाला बनाना आपका काम है। वह छोटे हैं बड़े आप हो। बड़ों को बदलना है। छोटे तो होते ही नटखट हैं। तो उनकी कमजोरियों को नहीं देखो – बुजुर्ग बन कमजोरियों को समाने वाले, बाप समान बनाने वाले बनो। इतनी जिम्मेवारी है आप लोगों की। यह जिम्मेवारी फिर से स्मृति दिलाने के लिए बुलाया है। समझ। सागर के बच्चे हो ना। सागर क्या करता है? समाता है। सबका समाकर रिफ्रेश कर देते हैं। तो आप भी सबकी बातों को समाकर सबको रिफ्रेश करने वाले। जो आये वह अनुभव करे कि इस विशेष आत्मा के संग से विशेष रंग चढ़ गया। सहयोग मिल गया। आप ही - सहयोग दो, सहयोग दो, ऐसा कहने वाले तो नहीं हो ना। सहयोग देने वाले हो। जब आदि से सहयोगी बने हो तो अन्त तक सहयोग देने वाले साथी बनेंगे ना। इतने सहयोग देंगे तो छोटे तो उड़ जायेंगे। जिस भी स्थान पर आप लोग जायेंगे वह स्थान उड़ने वाला स्थान बन जायेगा ना। आप उड़नखटोले बनकर जाओ, जो भी बैठे, सम्पर्क में आये वह उड़ जाए। बापदादा को खुशी है, कौन सी? कितने साथी हैं। जब समान को देखा जाता है तो समान बच्चों को देख बाप को खुशी होती है। अभी यहाँ थोड़े आये हैं, और भी हैं, जितने भी आये हैं, उतनों को भी देख बाप खुश होते हैं। अब तो उड़नखटोला बन सबको उड़ाओ। हमारे भाई इतनी मेहनत कर रहे हैं, तरस आता है ना। सहयोग दो और उड़ाओ।

यही सेवा है विशेष आत्माओं की। जिज्ञासु समझाया, कोर्स कराया, मेला कराया, किया। यह सब करते रहते हैं। मेलों में भी आप विशेष आत्माओं की विशेषता को देखें। बस आपका खड़ा होना और सभी को उमंग आना। काम करने वालों को विशेष उमंग उत्साह का ही सहयोग चाहता है। काम करने वाले आपके छोटे भाई बहन बहुत आ गये हैं। आप बुजुर्गों का काम है उन साथियों को स्नेह की दृष्टि देना, उमंग उत्साह का हाथ बढ़ाना। आपको देखकर बाप याद आ जाए। सबके मुख से निकले यह तो बाप के स्वरूप हैं। जैसे इन दोनों के लिए (दीदी, दादी के लिए) निकलता है कि यह बाप स्वरूप है। क्योंकि सेवा में प्रैक्टिकल कर्म कर रही हैं। तो ऐसे ही दृढ़ संकल्प का समारोह जरूर मनाना। क्या समझा? आप लोग तो तूफानों में नहीं आते हो ना। तूफानों से पार होने वाले। तूफानों में आने वाले नहीं। आप एगजैम्पल हो ना। आपको देखकर सब समझते हैं ऐसे ही चलना है, ऐसे ही होता है। तो इतना अटेन्शन रहे। अच्छा। सेवाधारियों से :- सेवाधारियों को तो सदा ही उड़ते रहना चाहिए – क्योंकि यज्ञ सेवा का बल बहुत है। तो सेवाधारी बलवान बन गये ना। यज्ञ सेवा का कितना गायन है। अगर यज्ञ सेवा सच्ची दिल से करते हैं तो एक सेकण्ड का भी बहुत फल है। आप लोग तो कितने दिन सेवा में रहे हो। तो फलों के भण्डार इकट्ठे हो गये। इतने फल जमा हो गये जो २१ पीढ़ी तक वह फल खाते ही रहेंगे। सेवाधारी वहाँ जाकर माया के वश नहीं हो जाना। सदा सेवा में बिजी रहना। मंसा से शुद्ध संकल्प की सेवा और सम्पर्क सम्बन्ध वा वाणी द्वारा परिचय देने की सेवा। सदा ही सेवा में बिजी रहना। सेवा का पार्ट अविनाशी है। चाहे यहाँ रहे चाहे कहीं भी जाओ, सेवाधारी के साथ सदा ही सेवा है। सदा के सेवाधारी हो। सेवा में बिजी रहेंगे तो माया नहीं आयेगी। जब खाली स्थान होता है तो दूसरे आते हैं। मच्छर भी आयेंगे, खटमल भी आयेंगे। इसलिए सदा बिजी रहो तो माया आयेगी ही नहीं। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। माया नमस्कार करके चली जायेगी। ऐसे बहादुर बनकर जा रहे हो। ऐसे तो नहीं वहाँ जाकर कहेंगे, आज क्रोध आ गया, आज लोभ, मोह आ गया...माया पेपर लेगी, वह भी सुन रही है कि यह वायदा कर रहे हैं। जहाँ बाप है वहाँ माया क्या करेगी। सदा बाप साथ है या अलग हो। कुमार अकेले तो नहीं समझते हो। ऐसे तो नहीं कोई सुनने वाला नहीं, कोई बोलने वाला नहीं... बीमार पड़ेंगे तो क्या करेंगे? दूसरा साथी याद तो नहीं आयेगा। दूसरा साथी लायेंगे तो उसका सुनना भी पड़ेगा, खिलाना भी पड़ेगा। सम्भालना भी पड़ेगा। ऐसा बोझ उठाने की जरूरत ही क्या है। सदा हल्के रहें। सदा युगल रूप हो, दूसरी युगल क्या करेंगे। कभी संकल्प आता है, बीमार पड़ते हो तब आता है? जिस सम्बन्ध की याद आये उसी सम्बन्ध से बाप को याद करो, तो बीमारी में सोये सोये भी ऐसा अच्छा खाना बना लेंगे जैसे दूसरा बना गया। तो सदा साथ रहना, अकेला हूँ नहीं, कम्बाइन्ड हूँ। आप और बाप दोनों कम्बाइन्ड हो, अलग कोई कर नहीं सकता, यह चैलेन्ज करो। चैलेन्ज करने वाले हो न कि घबराने वाले।

अच्छा –

प्रसनल मुलाकात :- संगमयुगी ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य क्या है? उस लक्ष्य को प्राप्त करने की विधि क्या है? उत्तर:- संगमयुगी ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है सदा सन्तुष्ट रहना और दूसरों को सन्तुष्ट करना। ब्राह्मण अर्थात् समझदार, स्वयं भी सन्तुष्ट रहेंगे और दूसरों को भी रखेंगे। अगर दूसरे के असन्तुष्ट करने से असन्तुष्ट होते तो संगमयुगी ब्राह्मण जीवन का सुख नहीं ले सकते। शक्ति स्वरूप बन दूसरों के वायुमण्डल से स्वयं को किनारे कर लेना अर्थात् अपने को सेफ कर लेना यही साधन है इस लक्ष्य को प्राप्त करने का। दुसरे की असन्तुष्टता से स्वयं को असन्तुष्ट नहीं होना है। दूसरा किसी भी प्रकार से असन्तुष्ट करने के निमित्त बने तो स्वयं को किनारा करके आगे बढ़ते जाना है, रूकना नहीं है।

प्रश्न :- कौन से संस्कार अपने निजी संस्कार बना लो तो सदा उड़ती कला में उड़ते रहेंगे?

उत्तर:- अपना निजी संस्कार बनाओ कि हर बात में मुझे आगे बढ़ना है। दूसरा बढ़े या न बढ़े। दूसरे के पीछे स्वयं को नीचे नहीं

आना है। सहानुभूति के कारण सहयोग देना दूसरी बात है लेकिन दूसरे के कारण स्वयं नीचे आ जाना यह ठीक नहीं। न व्यर्थ सुनो, न देखो। सेवा के भाव से न्यारा होकर देखो। दूसरे के कारण अपना समय और खुशी न गंवाओ तो सदा उड़ती कला में जाते रहेंगे।

25-5-83

ब्रह्मा बाप की बच्चों से एक आशा

सर्व आत्माओं के शुभचिन्तक, अविनाशी ज्ञान, शक्ति और खुशी के खजाने देने वाले, विदेही शिव बाबा बोले:-

आज बापदादा सर्व बच्चों की सेवा का, याद का और बाप समान बनने का चार्ट देख रहे थे। बापदादा द्वारा जो भी सर्व खजाने मिले, बाप को निराकार और आकार रूप से साकार में बुलाया और बापदादा भी बच्चों के स्नेह में बच्चों के बुलावे पर आये, मिलन मनाया, अब उसके फलस्वरूप सभी बच्चे कौन से फल बने – प्रत्यक्षफल बने, सीजन के फल बने, रूप वाले फल बने वा रूप रस वाले फल बने? डायरेक्ट पालना के अर्थात् पेड़ के पके हुए फल बने वा कच्चे फलों को कोई एक दो विशेषता के मसालों के आधार पर स्वयं को रंग रूप में लाया है वा अब तक भी कच्चे फल हैं! यह चार्ट बच्चों को देख रहे थे। संगमयुग की विशेषता प्रमाण, प्रत्यक्ष फल के समय प्रमाण, हर सबजेक्ट में, हर कदम में कर्म में प्रत्यक्षफल देने वाले, प्रत्यक्षफल खाने वाले बाप की पालना के पके हुए रंग, रूप, रस तीनों से सम्पन्न अमूल्य फल होना चाहिए। अभी अपने आप से पूछो – मैं कौन? सदा संग रहने का रंग सा ब्रह्मा बाप समान बाप को प्रत्यक्ष करने का रूप, सदा सर्व प्राप्तियों का रस ऐसा बाप समान बने हैं? आजकल ब्रह्मा बाप ब्राह्मण बच्चों की समान सम्पन्नता को विशेष देखते रहते हैं। सारा समय हर एक विशेष बच्चे का चित्र और चरित्र दोनों सामने रख देखते रहते हैं कि कहाँ तक सम्पन्न बने हैं। माला के मणके कौन और कितने अपने नम्बर पर सेट हो गये हैं। उसी हिसाब से रिजल्ट को देख विशेष ब्रह्मा बाप बोले – ब्राह्मण आत्मा अर्थात् हर कर्म में बापदादा को प्रत्यक्ष करने वाली। कर्म की कलम से हर आत्मा के दिल पर, बुद्धि पर, बाप का चित्र वा स्वरूप खींचने वाली से रूहानी चित्रकार बने हो ना। अभी ब्रह्मा बाप की, इस सीजन के रिजल्ट में बच्चों के प्रति एक आशा है। क्या आशा होगी? बाप की सदा यही आशा रहती कि हर बच्चा अपने कर्मों के दर्पण द्वारा बाप का साक्षात्कार करावे। अर्थात् हर कदम में फालो फादर कर बाप समान अव्यक्त फरिश्ता बन कर्मयोगी का पार्ट बजावे। यह आशा पूर्ण करना मुश्किल है वा सहज है? ब्रह्मा बाप तो सदा आदि से तुरन्त दान महापुण्य इसी संस्कार को साकार रूप में लाने वाले रहे ना। करेंगे, सोचेंगे। प्लैन बनायेंगे, यह संस्कार कभी साकार रूप में देखें? अभी-अभी करने का महा-मन्त्र हर संकल्प और कर्म में देखा ना। उसी संस्कार प्रमाण बच्चों से भी क्या आशा रखेंगे? समान बनने की आशा रखेंगे ना? सबसे पहले बापदादा मधुबन वालों के आगे रखते हैं। हो भी आगे ना। सबसे अच्छे ते अच्छे सैम्पल कहाँ देखते हैं सभी? सबसे बड़े ते बड़ा शोकेस मधुबन है ना। देश-विदेश से सब अनुभव करने के लिए मधुबन में आते हैं ना। तो मधुबन सबसे बड़ा शोकेस है। ऐसे शोकेस में रखने वाले शोपीस कितने अमूल्य होंगे। सिर्फ बापदादा से मिलने के लिए नहीं आते हैं लेकिन परिवार का प्रत्यक्ष रूप भी देखने आते हैं। वह रूप दिखाने वाले कौन? परिवार का प्रत्यक्ष सैम्पल, कर्मयोगी का प्रत्यक्ष सैम्पल, अथक सेवा-धारी का प्रत्यक्ष सैम्पल, वरदान भूमि के वरदानी स्वरूप का प्रत्यक्ष सैम्पल कौन है? मधुबन निवासी हो ना!

भागवत का महात्तम सुनने का बड़ा महत्व होता है। सारे भागवत का इतना नहीं होता। तो चरित्र भूमि का महात्तम मधुबन वाले है ना। अपने महत्व को तो याद रखते हो ना। मधुबन निवासियों को याद स्वरूप बनने में मेहनत है वा सहज है? मधुबन है ही प्रजा और राजा दोनों आत्माओं को वरदान देने वाला।

आजकल तो प्रजा आत्मायें भी अपना वरदान का हक लेकर जा रहीं हैं। जब प्रजा भी वरदान ले रही है तो वरदान भूमि में रहने वाले कितने वरदानों से सम्पन्न आत्मायें होंगी। अभी के समय प्रमाण सभी प्रकार की प्रजा अपना अधिकार लेने के लिए चारों ओर आने शुरू हो गई है। चारों ओर सहयोगी और सम्पर्क वाले वृद्धि को पा रहे हैं। प्रजा की सीजन शुरू हो गई है। तो राजे तो तैयार हो ना। वा राजाओं का छत्र कब फिट होता है कब नहीं होता। तख्तनशीन ही ताजधारी बन सकते हैं। तख्तनशीन नहीं तो ताज भी सेट नहीं हो सकता। इसलिए छोटी-छोटी बातों में अपसेट होते रहते। यह (अपसेट होना) निशानी है तख्तनशीन अर्थात् तख्त पर सेट न होने की। तख्तनशीन आत्मा को व्यक्ति तो क्या लेकिन प्रकृति भी अपसेट नहीं कर सकती। माया का तो नाम निशान ही नहीं। तो ऐसे तख्तनशीन ताजधारी वरदानी आत्मायें हो ना। समझा – मधुबन के ब्राह्मणों के महात्तम का महत्व। अच्छा – आज तो मधुबन निवासियों का टर्न है। बाकी सब गैलरी में बैठे हैं। गैलरी भी अच्छी मिली है ना। अच्छा-

आदि रत्न आदि स्थिति में आ गये ना। मध्य भूल गया ना। डालियाँ वगैरा सब छूट गई ना। आदि रत्न सभी उड़ते पंछी बनकर जा रहे हो ना। सोने हिरण के पीछे भी नहीं जाना। किसी भी तरह की आकर्षण वश नीचे नहीं आना। चाहे किसी भी प्रकार के सरकम-स्टांस बुद्धि रूपी पाँव को हिलाने आवें लेकिन सदा अचल अडोल, नष्टोमोहा और निर्माण रहना। तभी उड़ते पंछी बन उड़ते और

उड़ाते रहेंगे। सदा न्यारे और सदा बाप के प्यारे। न किसी व्यक्ति के न किसी हृद के प्राप्ति के प्यारे बनना। ज्ञानी तू आत्मा के आगे यह हृद की प्राप्ति यहाँ ही सोने हिरण के रूप में आती हैं। इसलिए हे आदि रत्नो, आदि पिता समान सदा निराकारी, निर्विकारी, निर-अहंकारी रहना। समझा। अच्छा-

ऐसे हर कर्म में बाप का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाने वाले, पुण्य आत्मायें, हर कर्म में ब्रह्मा बाप को फालो करने वाले, विश्व के आगे चित्रकार बन बाप का चित्र दिखाने वाले – ऐसे ब्रह्मा बाप समान श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

1-6-83

मीटिंग में पधारे हुए भाई बहनों के सम्मुख प्राण अव्यक्त बापदादा के उच्चारें हुए मधुर महावाक्य

जिम्मेवारी का ताज व तख्तधारी, महारथी बच्चों प्रति बापदादा बोले:-

सभी ताज और तख्तधारी विशेष आत्माओं की सभा है ना। सभी अपने को ताज व तख्तधारी समझते हो ना! सभी बेहद के सेवा-धारी के जिम्मेवारी के ताजधारी हो ना। बेहद का ताज अर्थात् बेहद की स्मृति स्वरूप में स्थित हो। बेहद की जिम्मेवारी के ताज-धारी। हर एक बेहद में फैली हुई हैं। हृद से निकल बेहद के बादशाह बन गये ना। जब देह के हृद की स्मृति से भी पार हो गये तो देह सहित देह के साथ सर्व हदों से पार हो गये। विशेष सेवा ही है हृद से बेहद में ले जाना। ब्रह्मा बाप अव्यक्त क्यों बने? हृद से निकाल बेहद में ले जाने के लिए। ब्रह्मा बाप के स्नेह का प्रत्यक्ष स्वरूप है फालो ब्रह्मा फादर। ब्रह्मा बाप अपने राइट हैण्ड बच्चों को, अपनी विशेष भुजाओं के लिए अव्यक्त वतन से बेहद के सेवा स्थान से बाहें पसार कर हाथ में हाथ मिलाने के लिए बुला रहे हैं। ब्रह्मा बाप का बच्चों से स्नेह है। तो ब्रह्मा बाप बुला रहे हैं कि बच्चे, बेहद में आ जाओ। यह आवाज सुनते हो? बस एक ही लहर ब्रह्मा बाप की सदा रहती है कि मेरे समान बेहद के ताजधारी बन चारों ओर प्रत्यक्षता की लाइट और माइट ऐसी फैलावें जो सर्व आत्माओं को निराशा से आशा की किरण दिखाई दे। सबकी अंगुली उस विशेष स्थान की ओर हो। जो आकाश से परे अंगुली कर दूँद रह हैं उन्हीं को यह अनुभव हो कि इस धरती पर, वरदान भूमि पर धरती के सितारे प्रत्यक्ष हो गये हैं। यह सूर्य, चन्द्रमा और तारामण्डल यहाँ अनुभव हो। जैसे साइन्स वाले साइन्स के आधार से आकाश के तारामण्डल का अनुभव कराते हैं। ऐसे यह धरती का चैतन्य तारामण्डल दूर वालों को भी अनुभव हो। इस शुभ आशा को पूर्ण करने वाले आप सभी निमित्त आत्मायें हो। ऐसे बेहद के प्लैन्स बनाये हैं ना। प्लैन्स तो यथा शक्ति बनाये। बापदादा अब समय प्रमाण बच्चों से कौन सी रही हुई सेवा चाहते हैं?

बापदादा आज रूह-रूहान कर रह थे। क्या रूह-रूहान हुई। बाप बोले कि मेरे निमित्त बने हुए श्रेष्ठ बच्चे, सिकीलधे बच्चे कहो, मुरब्बी बच्चे कहो वा सदा बाप के साथी बच्चे कहो – ऐसे बच्चे वरदान भूमि पर इकट्ठे हुए हैं, सेवा के प्लैन्स बनाने के लिए, तो ब्रह्मा बाप बोले कि जो मीटिंग में योजनायें निकालीं वह तो बहुत अच्छी। लेकिन मुख्य एक सेवा अभी भी रही हुई है। क्योंकि आप कितनी बड़ी अथार्टी वाले हो और कितने प्रकार की अथार्टी वाले हो, ज्ञान की अथार्टी, योगबल की अथार्टी, श्रेष्ठ धारणा स्वरूप की अथार्टी, डायरेक्ट बाप के वारिसपन की अथार्टी, विश्व परिवर्तन करने के निमित्त बनने की अथार्टी। कितनी अथार्टी है। जैसे एक शास्त्रों की अथार्टी वाले, थोड़ा बहुत त्याग कर पवित्र बनने की अथार्टी वाले, सिर्फ यह एक अथार्टी है, वह भी सत्यता की अथार्टी नहीं, भल महान आत्मायें हैं लेकिन परमात्मा बाप के सम्बन्ध में यथार्थ नालेज की अथार्टी नहीं – ऐसे एक अथार्टी वाले भी विश्व में सर्व आत्माओं को अपने तरफ आकर्षित कर झूठ को सत्य सिद्ध कर चलते आ रहे हैं। कितने समय से अपनी अथार्टी दिखाते आ रहे हैं। कितनी फलक से, अल्पकाल के प्राप्ति की झलक से अपना प्रभाव डालते हैं। तो जो सर्व अथार्टी वाली श्रेष्ठ आत्मायें हैं उन्हीं को क्या करना है? बाकी क्या रहा हुआ है, जानते हो? समाप्ति के लिए कहाँ तक समय का अन्दाज लगा रहे हो? ८४ तक वा 100 तक? कहाँ तक अन्दाज लगा रहे हो? दो हजार पूरे होने हैं वा उसके पहले होना है? अपनी तैयारी के हिसाब से क्या समझते हो? कौन सी बात अभी रही हुई है? नई दुनिया के लिए धरनी तो बना रहे हो। लेकिन नई दुनिया का आधार – यह नई नालेज है। पहली महिमा क्या आती है? ज्ञान का सागर कहते हो ना। तो जो पहली महिमा है ज्ञान, उस नये ज्ञान को दुनिया के आगे प्रत्यक्ष किया है? जब तक “यह नया ज्ञान है” यह प्रत्यक्ष नहीं हुआ है तो ज्ञानदाता कैसे प्रत्यक्ष हो। पहले ज्ञान आता है फिर दाता आता है। तो ज्ञानदाता ऊंचे ते ऊंचा है। या एक ही वह ज्ञानदाता है, यह सिद्ध कैसे होगा? इस नये ज्ञान से ही सिद्ध होगा। आत्मा क्या कहती और परमात्ममा क्या कहता है, यह अन्तर जब तक मनुष्यों की बुद्धि में न आये तब तक जो भी तिनके के सहारे पकड़े हुए हैं वह कैसे छोड़ेंगे। और एक का सहारा कैसे लेंगे। अभी तो छोटे-छोटे तिनकों के सहारे पर चल रहे हैं वो ही अपना आधार समझ रहे हैं। जब तक उन्हीं को ज्ञान द्वारा ज्ञानदाता का सहारा अनुभव नहीं हो तब तक इस हृद के बन्धनों से मुक्त हो नहीं सकते। अभी तक धरनी बनाने की, वायुमण्डल परिवर्तन करने की सेवा हुई है। अच्छा कार्य है, परिवार का प्यार है, यह प्यार का गुण वायुमण्डल को परिवर्तन करने के निमित्त बना। धरनी तो बन गई और बनती जायेगी। लेकिन जो फाउन्डेशन है, नवीनता है, बीज है, वह है नया ज्ञान। निःस्वार्थ प्यार है, रूहानी प्यार है यह तो अनुभव करते हैं लेकिन अभी प्यार के साथ-साथ ज्ञान की अथार्टी

वाली आत्मायें हैं, सत्य ज्ञान की अथार्टी है, यह प्रत्यक्षता अभी रही हुई है। जो भी आते हैं वो समझें कि यह नया ज्ञान, नई बात है। जो कोई ने नहीं सुनाई वह यहाँ सुनी। यह वर्णन करें कि यह देने वाला अथार्टी है, पवित्रता है, शान्ति है, प्यार है, स्वच्छता है यह सब बातें तो फाउन्डेशन है, जिस फाउन्डेशन के आधार पर धरनी परिवर्तन हुई। यह भी ४ स्तम्भ है। पहले जो किसी की भी बुद्धि इस तरफ टिकती नहीं थी सो अभी इन ४ स्तम्भों के आधार द्वारा बुद्धि की आकर्षण होती है। यह परिवर्तन तो हुआ। लेकिन अभी जो मुख्य बात है - नया ज्ञान, उसका आवाज बुलन्द हो। आज तक जिन बातों की सभी ने 'हाँ' की, उन बातों के लिए ब्र.कु. आलमाइटी अथार्टी 'ना' सिद्ध करके बताती हैं। जो वे ना कहते आप हाँ और ना का रात दिन का अन्तर है ना। तो इस महान अन्तर को सिद्ध करने वाली महान आत्मायें हैं, यह नाम अब प्रत्यक्ष करो तब जयजयकार होगी। आत्मा का ज्ञान यथार्थ रूप में न भी है लेकिन फिर भी लोग सुन करके मिक्स कर देते हैं कि हाँ वहाँ भी ऐसे ही कहते हैं। लेकिन यह आवाज बुलन्द हो कि दुनिया सारी एक तरफ है और ब्र.कु. दूसरे तरफ है। यह नया ज्ञान देने वाले अथार्टी हैं। यह अथार्टी प्रसिद्ध हो। इसी से ही शक्तिशाली आत्मायें आगे आयेंगी जो आपके तरफ से ढिढ़ोरा पिटवायेंगी। आपको ढिढ़ोरा नहीं पीटना पड़ेगा लेकिन ऐसी आत्मायें सैटिसफाय हो नई बात जान नये उमंग में आकर ढिढ़ोरा पीटेंगी। धर्म युद्ध भी तो अभी रही हुई है ना। अभी गुरुओं की गद्दी को कहाँ हिलाया है। अभी तो टाल टालियाँ आदि सब बहुत आराम से अपनी धुन में लगे हुए हैं। बीज कब प्रत्यक्ष रूप में आता है? मालूम है बीज ऊपर कब आता है? जब छोटी बड़ी टाल टालियाँ एकदम बिगर पत्तों की सूखी हुई डालियाँ रह जाती हैं तब बीज ऊपर प्रत्यक्ष होता है। जो उसका प्लेन बनाया है। जब अपनी स्टेज पर आते हैं तो अपने ओरीजनल नालेज की प्रत्यक्षता तो होनी चाहिए ना। अगर वरदान भूमि मे आकर भी सिर्फ कहे शान्ति बहुत अच्छी है, प्यार बहुत अच्छा है। सिर्फ यह थोड़ी बहुत झोली भरकर चले गये तो वरदान भूमि पर आकर विशेष क्या ले गये। नया ज्ञान भी तो सिद्ध करना है ना। इसी नये ज्ञान की अथार्टी द्वारा ही आलमाइटी अथार्टी सिद्ध होगा। देने वाला कौन! प्रेम और शान्ति मिलने से इतना जरूर समझते हैं कि इन्हें को बनाने वाला कोई श्रेष्ठ है। लेकिन स्वयं भगवान है यह बहुत कोई विरला समझते। तो समझा, क्या रहा हुआ है। अब नई दुनिया के लिए नया ज्ञान चारों ओर फैलाओ, समझा। कोटों में कोई निकले लेकिन ऐसा आवाज निकले जो चारों ओर पेपर्स में यह धूम मच जाए कि यह ब्र.कु. दुनिया से नया ज्ञान देती हैं। ज्ञान क्या देती हैं, उसका आधार क्या मानती हैं, उनको सिद्ध कैसे करती हैं यह जब अखबारों में आये तब समझो ज्ञान दाता का नगाड़ा बजा। समझा? ज्ञान के प्रभाव में प्रभावित हों। ज्ञान के प्रभावशाली और प्रेम के प्रभावशाली में क्या अन्तर है? ब्राह्मणों में भी दो भाग देखे ना। ब्राह्मण तो बने हैं लेकिन कोई प्यार के आधार पर कोई ज्ञान और प्यार दोनों के आधार पर। तो दोनों में स्थिति का अन्तर है ना। जो प्यार को भी ज्ञान से समझते हैं वह निर्विघ्न चलेंगे। जो सिर्फ प्यार के आधार पर चलते वह शक्तिशाली आत्मा नहीं होंगे। ज्ञान का बल जरूर चाहिए। जिनका पढ़ाई से प्यार है, मुरली से प्यार है और जिनका सिर्फ परिवार से प्यार है, उन्हीं में कितना अन्तर है! ब्राह्मण जीवन अच्छी लगी, पवित्रता अच्छी लगी, इसी आधार पर आने वाले और ज्ञान की शक्ति के आधार पर आने वाले, उनमें कितना अन्तर है। ज्ञान की मस्ती, अलौकिक, निराधार रहने वाली मस्ती है। वैसे प्रेम भी एक शक्ति है लेकिन प्रेम की शक्ति वाले आधार के बिना चल नहीं सकते। कोई न कोई आधार जरूर चाहिए। मनन शक्ति, ज्ञान की शक्ति वाले की होगी। जितनी मनन शक्ति होगी उतनी बुद्धि के एकाग्रता की शक्ति आटोमेटिकली आयेगी। और जहाँ बुद्धि की एकाग्रता है वहाँ परखने की और निर्णय करने की शक्ति स्वतः आती है। जहाँ ज्ञान का फाउन्डेशन नहीं होगा वहाँ परखने की शक्ति निर्णय करने की शक्ति कमजोर होगी। क्योंकि एकाग्रता नहीं। अच्छा।

बापदादा तो सब सुनते रहते हैं। हंसी भी आती और स्नेह में बलिहार भी जाते। बच्चों की हिम्मत देख खुश भी होते हैं। ब्रह्मा बाप को ज्यादा आता है कि यह मेरे समान बेहद के मालिक बन जाएँ। बच्चों के लिए रुके हुए हैं ना और दिन रात बच्चों की सेवा में तत्पर रहते। वतन में तो दिनरात नहीं है लेकिन स्थूल दुनिया में तो है ना। एक एक बच्चे को विशेष आत्मा, सम्पूर्ण आत्मा, सम्पन्न आत्मा, समान आत्मा देखने चाहते। बाप ब्रह्मा को कहते हैं धैर्य धरो। लेकिन ब्रह्मा को उमंग बहुत होता है ना। इसलिए वह बाप से यही रूह - रिहान करते कि बच्चे हाथ में हाथ दे मेरे समान बन जाएँ। ब्रह्मा बाप के साकार जीवन की आदि से लेकर क्या विशेषता देखी। कब नहीं लेकिन अभी करना है। कब शब्द न सुनने के न सुनाने के संस्कार रहे। अगर कोई बच्चा कहता था कि घण्टे के बाद करेंगे तो घण्टा लगाने दिया? कोई कहता था ट्रेन जाने में ५-१० मिनट हैं हम कैसे पहुँचेंगे तो रुकने दिया? गाड़ी रुक जायेगी लेकिन बच्चा पहुँच ही जायेगा। चलती हुई ट्रेन रुक जायेगी लेकिन बच्चे को पहुँचना ही है। यह प्रैक्टिकल देखा ना। तो ऐसे ही बच्चे भी किसी भी बात में स्व परिवर्तन में वा विश्व परिवर्तन में कब शब्द को बदलकर अब के प्रैक्टिकल जीवन में आ जाएँ यही ब्रह्मा बाप का उमंग सदा रहता है। तो फालो फादर है ना! अच्छा

सभी महारथियों ने सेवा के जो प्लैन्स बनाये हैं उसमें भी विशेष यूथ का बनाया है ना। यूथ वा युवा वर्ग की सेवा के पहले जब युवा वर्ग गवर्नमेंट के आगे प्रत्यक्ष होने का संकल्प रख आगे बढ़ रहा है तो मैदान में आने से पहले एक बात सदा ध्यान में रहे कि बोलना कम है, करना ज्यादा है। मुख द्वारा बताना नहीं है लेकिन दिखाना है। कर्म का भाषण स्टेज पर करें। मुख का भाषण करना तो

नेताओं से सीखना हो तो सीखो। लेकिन रूहानी युवा वर्ग सिर्फ मुख से भाषण करने वाले नहीं लेकिन उनके नयन, मस्तक, उनके कर्म भाषण करने के निमित्त बन जाएँ। कर्म का भाषण कोई नहीं कर सकता है। मुख का भाषण अनेक कर सकते। कर्म बाप को प्रत्यक्ष कर सकता है। कर्म रूहानियत को सिद्ध कर सकता है। दूसरी बात – युवा वर्ग सदा सफलता के लिए अपने पास एक रूहानी तावीज रखे। वह कौन सा? रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। यह रिगार्ड का रिगार्ड सफलता का अविनाशी रिगार्ड हो जायेगा। युवा वर्ग के लिए सदा मुख पर एक ही सफलता का मन्त्र हो - 'पहले आप' – यह महामन्त्र मन से पक्का रहे। सिर्फ मुख के बोल हों कि पहले आप और अन्दर में रहे कि पहले मैं, ऐसे नहीं। ऐसे भी कई चतुर होते हैं मुख से कहते पहले आप, लेकिन अन्दर भावना पहले मैं की रहती है। यथार्थ रूप से पहले मैं को मिटाकर दूसरे को आगे बढ़ाना सो अपना बढ़ना समझते हुए इस महामन्त्र को आगे बढ़ाते सफलता को पाते रहेंगे। समझा। यह मन्त्र और तावीज सदा साथ रहा तो प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा। प्लैन्स तो बहुत अच्छे हैं लेकिन प्लेन बुद्धि बन प्लेन प्रैक्टिकल में लाओ। सेवा भल करो लेकिन ज्ञान को जरूर प्रत्यक्ष करो। सिर्फ शान्ति, शान्ति तो विश्व में भी सब कह रहे हैं। अशान्ति में शान्ति मिक्स कर देते हैं। बाहर से तो सब यही नारे लगा रहे हैं कि शान्ति हो। अशान्ति वाले भी नारा शान्ति का ही लगा रहे हैं। शान्ति तो चाहिए लेकिन जब अपनी स्टेज पर प्रोग्राम करते हो तो अपनी अथार्टी से बोलो। वायुमण्डल को देखकर नहीं। वह तो बहुत समय किया और उस समय के प्रमाण यही ठीक रहा। लेकिन अब जबकि धरनी बन गई है तो ज्ञान का बीज डालो। टापिक भी ऐसी हो। तुम लोग टापिक इसलिए चेन्ज करते हो कि दुनिया वाले इन्ट्रेस्ट लें। लेकिन आवे ही इन्ट्रेस्ट वाले। कितने मेले, कितनी कानफ्रेन्स, कितने सेमीनार आदि किये हैं। १३ वर्ष लोगों के आधार पर टापिक्स बनाये। आखिर गुप्त वेष में कितना रहेंगे। अब तो प्रत्यक्ष हो जाओ। वह समय अनुसार जो हुआ वह तो हुआ ही। लेकिन अभी अपनी स्टेज पर परमात्म बाम तो लगाओ। उन्हीं का दिमाग तो घूमे कि यह क्या कहते हैं। नहीं तो सिर्फ कहते कि बहुत अच्छी बातें बोलो। तो अच्छी, अच्छी ही रही और वह वहाँ के वहाँ रह जाते। कुछ हलचल तो मचाओ ना। हरेक को अपना हक होता है। पाइंटस भी दो तो अथार्टी और स्नेह से दो तो कोई कुछ नहीं कर सकता। ऐसे तो कई स्थानों पर अच्छा भी मानते हैं कि यह अपनी बात को स्पष्ट करने में बहुत शक्तिशाली है। ढंग कैसा हो वह तो देखना पड़ेगा। लेकिन सिर्फ अथार्टी नहीं, स्नेह और अथार्टी दोनों साथ साथ चाहिए। बापदादा सदैव कहते कि तीर भी लगाओ साथ-साथ मालिश भी करो। रिगार्ड भी अच्छी तरह से दो लेकिन अपनी सत्यता को भी सिद्ध करो। भगवानुवाच कहते हो ना। अपना थोड़े ही कहते हो। बिगड़ने वाले तो चित्रों से भी बिगड़ते हैं फिर क्या करते हो। चित्र तो नहीं निकालते हो ना। साकार रूप में तो फलक से किसी के भी आगे अथार्टी से बोलने का प्रभाव क्या निकला। कब झगड़ा हुआ क्या? यह तरीका भाषण का भी सीखे ना। ज्ञान की रीति कैसे बोलना है – स्टडी की ना। अब फिर यह स्टडी करो। दुनिया के हिसाब से अपने को बदला, भाषा को चेन्ज किया ना। तो जब दुनिया के रूप में चेन्ज कर सके तो यथार्थ रूप से क्या नहीं कर सकते। कब तक ऐसे चलेंगे जो कहते हैं? इसमें तो खुश हैं कि यह जो कहते हैं बहुत अच्छा है। आखिर दुनिया में यह प्रसिद्ध हो कि यही यथार्थ ज्ञान है। इससे ही गति सद्गति होगी। इस ज्ञान बिना गति सद्गति नहीं। अभी तो देखो योग शिविर करके जाते हैं। बाहर जाते फिर वही की वही बात कहेंगे कि परमात्मा सर्वव्यापी है। यहाँ तो कहते योग बहुत अच्छा लगा, फाउन्डेशन नहीं बदलता। आपके शक्ति के प्रभाव से परिवर्तन हो जाते हैं। लेकिन स्वयं शक्तिशाली नहीं बनते। जो हुआ है यह भी जरूरी था। जो धरनी कलराठी बन गई थी वह धरनी को हल चलाके योग्य धरनी बनाने का यही साधन यथार्थ था। लेकिन आखिर तो शक्तियाँ अपने शक्ति स्वरूप में भी आयेंगी ना। स्नेह के रूप में आयें। लेकिन यह शक्तियाँ हैं, इनका एक एक बोल हृदय को परिवर्तन करने वाला है, बुद्धि बदल जाए, ना से हाँ में आ जाएँ – यह रूप भी प्रत्यक्ष होगा ना। अभी उसको प्रत्यक्ष करो। उसका प्लेन बनाओ। आते हैं खुश होकर जाते हैं। वो तो जिन्हों को इतना आराम, इतना स्नेह, खातिरी मिलेंगी तो जरूर सन्तुष्ट तो होकर जायेंगे। ऐसा प्यार तो कहीं भी नहीं मिलता। इसलिए सन्तुष्ट होकर जाते हैं। लेकिन शक्ति रूप बनकर नहीं जाते। ब्रह्मा बाप की सेवा की योजनायें देखो तो क्या-क्या योजनायें प्रैक्टिकल में की ब्रह्मा बाप कहते थे कि सब प्रदर्शनियों में प्रश्नावली लगाओ। उसमें कौन सी बातें थीं। तीर समान थी ना। फार्म भराने के लिए कहते थे। यह राइट है वा रांग, हाँ वा ना, लिखो। फार्म भरते थे ना। तो क्या योजनायें रही। एक हैं ऐसे ही भरवाना। जल्दी-जल्दी में रांग वा राइट कर दिया, लेकिन समझाकर भराओ। तो उसी अनुसार यथार्थ फार्म भरेंगे। सिद्ध तो करना ही पड़ेगा। वह आपस में प्लेन बनाओ। जो अथार्टी भी रहे और स्नेह भी रहे। रिगार्ड भी रहे और सत्यता भी प्रसिद्ध हो। ऐसे किसकी इनसल्ट थोड़े ही करेंगे। यह भी लक्ष्य है कि हमारी ही ब्रैन्चेज हैं। छोटों को प्यार देना यह तो परम्परा ही है। अच्छा- (दो चार भाई बहनें बापदादा से छुट्टी लेने आये।)

स्नेह का रेसपान्ड तो मिल गया ना। सच्ची दिल पर साहेब सदा राजी है। आदि से सच्ची लगन में रहने वाली आत्मायें हो इसलिए बाप भी सच्चों को सदा स्नेह का रेसपान्ड देता रहता है। सदा दिल में बाप ही समाया हुआ है। इसलिए अच्छे तीव्र पुरुषार्थ में चल रहे हो। कर्मयोगी आत्मा हो ना। कर्म और योग कम्बाइन्ड है ना। सदा बैलेन्स रख, बाप की ब्लैसिंग को लेने वाले और सदा ब्लिस-फुल जीवन में रहने वाले। ऐसी श्रेष्ठ आत्मा हो। बाप सदा हर बच्चे प्रति यही शुभ आश रखते कि यह विजय माला के मणके हैं।

दीदी मनमोहिनी जी के साकार शरीर छोड़ने पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्य

आज अटल राज्य अधिकारी, अटल, अचल स्थिति में रहने वाले विजयी बच्चों को देख रहे हैं। अभी से अटल बनने के संस्कारों के आधार पर अटल राज्य की प्रालम्ब पाने के पहले पुरुषार्थ में कल्प कल्प अटल बने हो। ड्रामा के हर दृष्य को ड्रामा चक्र में संगमयुगी टाप पाइंट पर स्थित हो कुछ भी देखेंगे तो स्वतः ही अचल अडोल रहेंगे। टाप पाइंट से नीचे आते हैं तब ही हलचल होती है। सभी ब्राह्मण श्रेष्ठ आत्मायें सदा कहाँ रहते हो? चक्र में संगमयुग ऊंचा युग है। चित्र के हिसाब से भी संगमयुग का स्थान ऊंचा है। और युगों के हिसाब से छोटा सा युग पाइंट ही कहेंगे। तो इसी ऊंची पाइंट पर, ऊंचा स्थान पर, ऊंची स्थिति पर, ऊंची नालेज में, ऊंचे ते ऊंचे बाप की याद में। ऊंचे ते ऊंची सेवा स्मृति स्वरूप होंगे तो सदा समर्थ होंगे। जहाँ समर्थ है वहाँ व्यर्थ सदा के लिए समाप्त है। हरेक ब्राह्मण पुरुषार्थ ही व्यर्थ को समाप्त करने का कर रहे हो। व्यर्थ का खाता वा व्यर्थ का हिसाब किताब समाप्त हुआ ना। वा अभी भी कुछ पुराना व्यर्थ का खाता है? जबकि ब्राह्मण जन्म लेते प्रतिज्ञा की तन-मन-धन सब तेरा तो व्यर्थ संकल्प समाप्त हुआ, क्योंकि मन समर्थ बाप को दिया।

दो-तीन दिनों में मन तेरा के बदले मेरा तो नहीं बना दिया। ट्रस्टियों को डायरेक्शन है कि मन से सदा समर्थ सोचना है। तो व्यर्थ की मार्जिन है क्या? व्यर्थ चला? आप कहेंगे कि स्नेह दिखाया। परिवार के स्नेह के धागे में तो सभी बंधे हुए हो, यह तो बहुत अच्छा। अगर स्नेह के मात गिराये तो वह व्यर्थ के खाते में जमा हुआ। स्नेह के मोती तो आपकी स्नेही दीदी के गले में माला बन चमक रहे हैं। ऐसे सच्चे स्नेह की मालायें तो दीदी के गले में बहुत पड़ी हैं। लेकिन एक परसेन्ट भी हलचल की स्थिति में आये, ऑसू बहाये, वह वहाँ दीदी के पास नहीं पहुँचें। क्यों? वह सदा विजयी, अचल, अडोल आत्मा रही है और अब भी है तो अचल आत्मा के पास हलचल वाले की याद पहुँच नहीं सकती। वह यहाँ की यहाँ ही रह जाती है। मोती बन माला में चमकते नहीं हैं। जैसी स्थिति वाले, जैसी पोजीशन वाली आत्मा वैसी पोजीशन में स्थित रहने वाली आत्माओं की याद आत्मा को पहुँचती है। स्नेह है, यह तो बहुत अच्छी निशानी है। स्नेह है तो अर्पण भी स्नेह करो ना। जहाँ सच्चा श्रेष्ठ स्नेह है वहाँ दुख की लहर नहीं। क्योंकि दुखधाम से पार हो गये ना।

मीठे-मीठे उल्हनें भी सब पहुँचे। सभी का उल्हना यही रहा कि हमारी मीठी दीदी को क्यों बुलाया। तो बापदादा बोले जो सबको मीठी लगती वही बाप को मीठी लगेगी ना। अगर आवश्यकता ही मिठास की हो तो और किसकों बुलायें। मीठे ते मीठे को ही बुलायेंगे ना।

आप लोग ही सोचते हो और बार-बार पूछते हो कि एडवांस पार्टी की विशेष आत्मायें अब तक गुप्त क्यों? तो प्रत्यक्ष करने चाहते हो ना। समय प्रमाण कुछ एडवांस पार्टी की आत्मायें श्रेष्ठ आत्माओं का आवाह कर रही हैं। ऐसे आदि परिवर्तन के विशेष कार्य अर्थ आदिकाल वाली आदि रत्न आत्मायें चाहिए। विशेष योगी आत्मायें चाहिए। भाग्य विधाता ब्रह्मा को भी कहा जाता है। समझा क्यों बुलाया है। यह सोचते हो यहाँ क्या होगा? कैसे होगा? ब्रह्मा बाप अव्यक्त हुए तो क्या हुआ और कैसे हुआ, देखा ना। दादी को अकेले समझते हो? वह नहीं समझती है, आप लोग समझते हो। ऐसे है ना? (दादी की ओर ईशारा) आपकी डिवाइन युनिटी नहीं है, है ना? तो डिवाइन युनिटी की भुजायें नहीं हैं क्या? डिवाइन युनिटी है ना? जब चाहो जिसको चाहो सभी सेवा के लिए जी हाजिर हैं। इन दादियों की आपस में बहुत अन्दरूनी प्रीति है, आप लोगों को पता नहीं है इसलिए समझते हो अभी क्या होगा। एक दीदी ने यह साबित कर दिखाया कि हम सभी आदि रत्न एक है। दिखाया ना? ब्रह्मा बाप के बाद साकार रूप में ९ रत्नों की पूज्य आत्मायें सेवा की स्टेज पर प्रत्यक्ष हुई तो ९ रत्न वा आठ की माजा सदा एक दो के सहयोगी हैं। कौन हैं आठ की माला जो ओटे सेवा में वह अर्जुन अर्थात् अष्ट माला है। तो सेवा की स्टेज पर अष्ट रत्न, ९ रत्न अपना पार्ट बजा रहे हैं। और पार्ट बजाना ही अपना पार्ट वा अपना नम्बर प्रत्यक्ष करना है। बापदादा ऐसे नम्बर नहीं देंगे लेकिन पार्ट ही प्रत्यक्ष कर रहा है। तो अष्ट रत्न हैं आपस में सदा के स्नेही और सदा के सहयोगी। इसलिए सदा आदि से सेवा के सहयोगी आत्मायें सदा ही सहयोग का पार्ट बजाती रहेंगी। समझा। और क्या क्वेश्चन है? बताया क्यों नहीं, यह क्वेश्चन है? बतलाते तो दीदी के योगी बन जाते। ड्रामा का विचित्र पार्ट है, विचित्र का चित्र पहले नहीं खींचा जाता है। हलचल का पेपर अचानक होता है। और अभी भी इस विशेष आत्मा का पार्ट अभी तक जो आत्मायें गई हैं उन्हीं से न्यारा और प्यारा है। हर एक के क्षेत्र में इस श्रेष्ठ आत्मा का साथ, सहयोग की अनुभूति करते रहेंगे। ब्रह्मा बाप का अपना पार्ट है, उन जैसा पार्ट नहीं हो सकता। लेकिन इस आत्मा की विशेषता सेवा के उमंग उत्साह दिलाने में योगी, सहयोगी और प्रयोगी बनाने में सदा रही है। इसलिए इस आत्मा का यह विशेष संस्कार समय प्रति समय आप सबको भी सहयोगी रहने का अनुभव कराता रहेगा। यह भी हर एक आत्मा का अपना अपना विचित्र पार्ट है। अच्छा।

मधुबन में आये स्नेह का स्वरूप दिखाया उसके लिए यह भी विश्व में सेवा के निमित्त पार्ट बजाया। यह आप सबका आना विश्व में स्नेह की लहरें, स्नेह की खुशबू, स्नेह की किरणें फैलाना है। इसलिए भले पधारे। दीदी की तरफ से भी बाप-दादा सभी को स्नेह की, सेवा के स्वरूप की बधाई दे रहे हैं। दीदी भी देख रही है, टी.वी.पर बैठी है। आप भी वतन में जाओ तब देखो ना। यह भी सर्विस की एक छाप है।

आज के संगठन में कमल बच्ची (दीदी जी की लौकिक भाभी) भी याद आई, वह भी याद कर रही है और जिन्होंने भी स्नेही श्रेष्ठ आत्मा के प्रति अपना सहयोग दिया उन अथक बच्चों को चाहे यहाँ बैठे हैं वा नहीं भी बैठे हैं लेकिन सभी बच्चों ने शुभ भावना, शुभ कामना और एक ही लगन से जो अपना स्नेह दिखाया वह बहुत ही श्रेष्ठ रहा। इसके लिए विशेषज्ञ बापदादा को दीदी ने कहा कि हमारी तरफ से ऐसे स्नेही सेवाधारी परिवार को याद और थैंक्स देना। तो दीदी का काम आज बापदादा कर रहे हैं। आज बापदादा सन्देशी बन सन्देश दे रहे हैं। जो हुआ बहुत ही राजों से भरा हुआ ड्रामा हुआ। आप सबको दीदी प्रिय हैं और दीदी को सेवा प्रिय है। इसलिए सेवा ने अपनी तरफ खींच लिया। जो हुआ बहुत ही परिवर्तन के पर्दे को खोलने के लिए अच्छे ते अच्छा हुआ। न भगवती का (डा.) का दोष है न भगवान का दोष है। यह तो ड्रामा का राज है। इसमें न भगवती कुछ कर सकता न भगवान। कभी भी उसके प्रति नहीं सोचना कि इसने ऐसा किया, ऐसा आपरेशन कर लिया, नहीं। उसका स्नेह लास्ट तक भी माँ का ही रहा। इसलिए उसने अपनी तरफ से कोई कमी नहीं की। यह तो ड्रामा का खेल है। समझा – इसलिए कोई संकल्प नहीं करना।

आज तो सिर्फ आज्ञाकारी बन दीदी की तरफ से सन्देशी बन आये हैं। सभी अटल स्थिति में स्थित रहने वाले, अटल राज्य अधिकारी, निश्चय बुद्धि निश्चिन्त, विजयी बच्चों को आज त्रिमूर्ति याद- प्यार दे रहे हैं, और नमस्ते कर रहे हैं। अच्छा-”

डिवाइन युनिटी यहाँ आ जाए:- (स्टेज पर बापदादा ने सभी दादियों को बुलाया और माला के रूप में बिठा दिया) माला तो बन गई ना। (दादी जी से) अभी यह (जानकी दादी) और यह (चन्द्रमणी दादी) आपके विशेष सहयोगी हैं। इस रथ का (गुल्ज़ार बहन का) तो डबल पार्ट है। बापदादा का पार्ट और यह पार्ट – डबल पार्ट। सहयोगी तो सभी हैं आपके। इसको (निर्मलशान्ता दादी को) सिर्फ थोड़ा सा जब मौसम अच्छी हो तब बुलाना उड़ता पंछी हैं ना सभी? कोई सेवा का बन्धन नहीं। स्वतन्त्र पंछी तो ताली बजायी और उड़े। ऐसे हैं ना। स्वतन्त्र पंछी किसी भी विशेष स्थान और विशेष सेवा का बन्धन नहीं। विश्व की सेवा का बन्धन। बेहद सेवा का बन्धन। इसलिए स्वतन्त्र हो। जब भी जहाँ आवश्यकता है वहाँ पहले मैं। हरेक आत्मा का अपना अपना पार्ट है। डिवाइन युनिटी है पालना वाली और मनोहर पार्टी है सेवा के क्षेत्र में आगे आगे बढ़ने वाली। तो अभी सेवा के साथ साथ पालना की विशेष आवश्यकता है। जैसे दीदी को पालना के हिसाब से कई आत्मायें माँ के स्वरूप में देखती रहीं वैसे तो मात पिता एक है, लेकिन साकार में निमित्त बन पार्ट बजाने के कारण पालना देने का विशेष पार्ट बजाया। ऐसे ही जो आदि रत्न हैं, उन्हीं को पालना देने का, बाप की पालना लेने का अधिकारी बनाने की पालना देना है। लेनी बाप की पालना है लेकिन बाप की पालना लेने के भी पात्र तो बनाना पड़ेगा ना। तो वह पात्र बनाने की सेवा इस आत्मा ने (दीदी जी ने) बहुत अच्छी नम्बरवन की। तो आप भी सभी नम्बरवन हो ना। सेकण्ड माला में तो नहीं हो ना। पहली माला में हो ना। तो पहली माला वाले तो सभी नम्बरवन हैं। अच्छा – पाण्डवों को भी बुलाओ।

(बापदादा के सामने सभी मुख्य भाई स्टेज पर आये):- पाण्डव भी आदि रत्न हो ना। पाण्डव भी माला में हैं ऐसे नहीं सिर्फ शक्तियाँ हैं, पाण्डव भी हैं। किस माला में अपने को देखते हो। वह तो हरेक आप भी जानते हो और बाप भी जानते हैं लेकिन पाण्डव भी इसी विशेषज्ञ याद माला में हैं। कौन हैं? कौन समझते हैं अपने को? बिना पाण्डवों के कोई भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। जितनी शक्तियों की शक्ति है वैसे पाण्डवों की भी विशाल शक्ति है इसलिए चतुर्भुज रूप दिखाया है। कम्बाइन्ड। दोनों ही कम्बाइन्ड रूप से इस सेवा के कार्य में सफलता पाते हैं। ऐसे नहीं समझना यही (दादियाँ) अष्ट देव हैं। या यही ९ रत्न हैं। लेकिन पाण्डवों में भी हैं। समझा – इतनी जिम्मेवारी का ताज सदा पड़ा रहे। सदा ताज पड़ा है ना। सभी एक दो के सहयोगी बनें। यह सब बाप की भुजायें हैं वा साकार में निमित्त बनी हुई दादी की सहयोगी आत्मायें हैं सदा हक एक हैं – यही नारा सदा ही सफलता का साधन है। संस्कार मिलाने की रास करने वाले सदा ही हर जन्म में श्रेष्ठ आत्माओं के संगठन में रास करते रहेंगे। यहाँ की रास मिलाना अर्थात् सदा क्या पार्ट बजायेंगे। सदा श्रेष्ठ आत्माओं के फ्रैन्ड्स बनेंगे, सम्बन्धी बनेंगे। बहुत नजदीक सम्बन्धी लेकिन सम्बन्धी और मित्र के दोनों स्वरूप के साथी। मित्र के मित्र भी सम्बन्धी के सम्बन्धी भी। तो निमित्त हो। यही दीदी की रूह-रिहान रही। तो सब पाण्डव और शक्तियाँ एक बाप की श्रीमत के गुलदस्ते में गुलदस्ता बनें। दीदी से विशेष स्नेह है ना आप सबका।

अच्छा – आज तो ऐसे ही मिलन मनाने आये हैं। इसलिए अभी छुट्टी लेते हैं। (दादी जी ने बापदादा के सामने भोग रखा तो बाबा बोले) आज आफीशल मिलने आये हैं इसलिए कुछ स्वीकार नहीं करेंगे। पहले बच्चे स्वीकार करते हैं फिर बाप। फिर तो सदा ही मिलते रहेंगे, खाते रहेंगे, खिलाते रहेंगे लेकिन आज दीदी के सन्देशी बनकर आये हैं, सन्देशी सन्देश देकर चला जाता है। दीदी ने कहा है दादी से हाथ मिलाकर आना। (बापदादा ने दादी जी को हाथ दिया और वतन में उड़ गये।)